P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-7* (Part-2) March- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

दूरवर्ती शिक्षा में शैक्षिक प्रौद्योगिकी का उपयोग

कु0 कृष्णा
शोधार्थी,
शिक्षा शास्त्र विभाग,
जे0 एन0 यू0 जयपुर,
जयपुर, राजस्थाान, भारत

सारांश

दूरस्थ शिक्षा से तात्पर्य दूर दराज में रहने वाले उन व्यक्तियों की शिक्षा से लिया जाता है जो किसी कारण औपचारिक शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाये अथवा नहीं कर पा रहे हैं। वास्तव में दूरस्थ शिक्षा निरौपचारिक शिक्षा की वह प्रणाली है जिसके द्वारा शिक्षक संस्थाओं से दूर बैठे उन बच्चों, युवकों और प्रौढ़ों की शिक्षा की व्यवस्था की जाती है जो किसी कारण किसी स्तर की औपचारिक शिक्षा की प्राप्त करने की इच्छा, लगन और शक्ति है।

इतनी वृहत् जनसंख्या को शिक्षा दूरवर्ती शिक्षा के माध्यम से आसानी से प्रदान की जा सकती है। लचीली व्यवस्था प्रणाली औपचारिक शिक्षा की तुलना में नियमों व शर्तो के पालन में कमी, ग्रामीण क्षेत्रों में पहुंच, सेवारत या अन्य व्यक्तियों द्वारा ज्ञान का विस्तार तथा मजदूर विकलांग तथा गृहणियों के लिए दूरस्थ शिक्षा की बहुत उपयोगिता है। दूरवर्ती शिक्षा ने प्रत्येक व्यक्तियों को उच्च शिक्षा का अवसर प्रदान कर उनके सपनों को सकार करने का अवसर प्रदान किया है।

मुख्य शब्द : दूरस्थ शिक्षा, प्रौद्योगिकी, शैक्षिक, उपयोग।

प्रस्तावना

सामान्यतः दूर शिक्षा से तात्पर्य दूर दराज में रहनें वाले उन व्यक्तियों की शिक्षा से लिया जाता है जो किसी कारण किसी स्तर की शिक्षा प्राप्त नही कर पायें अथवा नही कर पा रहे है उनके लिए सुविधा प्रदान करने से है।

दूरस्थ शिक्षा की शुरूआत अंग्रेजी भाषा का विकास करने वाले आइजक पिटमैन ने की थी । 1873 में अमेरिका में पत्राचार द्वारा अनुदेशन को संगठित करने का प्रयत्न किया । 1936 में अन्तर्राष्ट्रीय पत्राचार शिक्षा परिसर का गठन किया गया। हमारे देश में सर्वप्रथम 1962 में दिल्ली विश्वविद्यालय ने पत्राचार पाठ्यक्रम शुरू किये। वर्तमान में पत्राचार शिक्षा और खुली शिक्षा दोनों ही दूर शिक्षा के अन्तर्गत आती है। देश के प्रत्येक नागरिकों को शिक्षा के लिए स्कूली स्तर व उच्च स्तर की शिक्षा देने के अवसर प्रदान करतें है।

रूस पहला देश है जिसकी सरकार ने 1962 में पत्राचार के माध्यम से शिक्षा की व्यवस्था को राष्टीय रूप दिया। वर्तमान में दूरस्थ शिक्षा के विकल्प के रूप में पत्राचार शिक्षा और खुली शिक्षा के माध्यम से प्रदान की जा रही है।

अध्ययन का उद्देश्य

वर्तमान में हमारे देश में दूरस्थ शिक्षा की व्यावस्था कई रूपों में हो रहीं है। पत्राचार शिक्षा और जनसंचार के माध्यमों से प्रौढ़ शिक्षा, सतत् शिक्षा एवं जन शिक्षा सम्बन्धी कार्यक्रमों का प्रसारण किया जा रहा है। वर्तमान में हमारे देश में दूरस्थ शिक्षा के निम्न उद्देश्य है।

1. जो बच्चे, युवक अथवा प्रौढ़ किसी कारण से माध्यमिक एवं उच्च स्तर की औपचारिक शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाये हैं अथवा नहीं कर पा रहे हैं उनके लिए शिक्षा की व्यवस्था करना।
2. काम में लगे स्त्री–पुरूषों के लिए उनकी आवश्यकतानुसार शिक्षा की व्यवस्था करना।
3. औपचारिक शिक्षा की अपेक्षा कम खर्चीली अर्थात् समय, श्रम व धन में बचत के द्वारा शिक्षा की व्यवस्था करना ।
4. औपचारिक शिक्षण संस्थानों में प्रवेश के दबाव को कम करना।

दूरस्थ शिक्षा की कार्य प्रणाली

1. सीखने की सामग्री का निर्माण ।
2. सीखने की सामग्री एवं दत्त कार्य का डाक द्वारा प्रेषण।
3. इनका सामान्य प्रसारण रेडियो अथवा टेलीविजन पर किया जाता है।
4. स्व–अध्ययन सामगी , मुद्रित पाठ्य पुस्तक, टेपरिकार्डर , वीडियो कैसिट और कम्प्यूटर में प्रयोग होने वाली डिस्क शिक्षार्थी को अध्ययन केन्द्र से वितरीत होती है।

शैक्षिक प्रौद्योगिकी

मानव के जीवन में दिन –प्रतिदिन परिवर्तन होते रहते हैं व उन परिवर्तनों के साथ सामंजस्य करता हुआ विकास की ओर अग्रसर होता है, उसके जीवन का कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं है जिसे तकनीक ने प्रभावित न किया हो। तकनीक ने व्यक्ति की सोच एवं दृष्टिकोण को पूरी तरह से वैज्ञानिक बना दिया है इससे हमारी शिक्षण व्यवस्था भी बहुत प्रभावित हुई है। परन्तु शिक्षा में तकनीकी का प्रयोग बहुत बाद में किया गया है। आज शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के ज्ञान देने के साधन के रूप में शिक्षण मशीन, रेडियों, कम्प्यूटर, टेलीविजन, ग्रामोंफोन, प्रोजेक्टर आदि का प्रयोग किया जाने लगा है। इनके प्रयोग से शिक्षण प्रक्रिया प्रभावपूर्ण हो गई है फिर भी भारत जैसे गरीब देश में शिक्षा के क्षेत्र में इसका प्रयोग अभी शैशव अवस्था में ही है।

इस प्रकार शैक्षिक तकनीकी व्यवहारिक विज्ञान है जो वैयक्तिक विभिन्नताओं के आधार पर शिक्षण एवं अधिगम की प्रक्रिया से सम्बध रखता है तथा शिक्षार्थी अपनी आवश्यकता, रूचि, क्षमता, योग्यता, सामर्थ्य के अनुसार अनुदेशन प्राप्त कर ज्ञान को अधिक सुदृढ़, सुगम, स्वभाविक एवं प्रभावशाली बनाता है।

वर्तमान में शिक्षा तकनीकी में शिक्षण की उपादेयता बढ़ाती है। छात्रों को प्रभावशाली ज्ञान देने के लिए अनेक तकनीकों को काम में लिया जाता है। जिनमें अभिक्रमित अनुदेशन, दृश्य–श्रव्य सामग्री, वीडियों टेप, टेपरिकॉर्डर तथा कम्प्यूटर आदि प्रमुख है। इनका प्रयोग औपचारिक शिक्षा व अनौपचारिक शिक्षा में नियोजन, क्रियान्वयन और मूल्यांकन के रूप में बडे पैमाने पर प्रयोग किया जा रहा है।

दूरवर्ती शिक्षा में शैक्षिक प्रौद्योगिकी

वर्तमान में दूरस्थ शिक्षा प्रक्रिया में तकनीकी का जो योगदान रहा है वह छात्र तथा शिक्षकों के लिए बहुत ही सार्थक साबित हो रहा है । शिक्षा के प्रत्येक क्षेत्र में शिक्षार्थी तकनीकी की सहायता से अपने ज्ञान को बढानें का प्रयास करते है। साथ ही शैक्षिक तकनीकी शिक्षक की उपादेयता भी बढाती है। ज्ञान के संचय,हस्तान्तरण तथा विकास के लिए मशीनों की सहायता ली जाती है। टेपरिकॉर्डर तथा फिल्मों द्वारा बहुत सा ज्ञान संचित किया जाता है तथा रेडियों, टेलीविजन व इन्टरनेट की सहायता से असंख्य छात्रों को घर बैठें ही ज्ञान का प्रसार किया जाता है। अनुसंधान कार्य हेतु प्रदत्तो का प्रसार किया जाता है अनुसंधान कार्य हेतु प्रदतो का संकलन एवं विश्लेषण कम्प्यूटर की सहायता से असानी से किया जा सकता है । पुस्तकालय के लिए कम्प्यूटर का प्रयोग किया जाने लगा है जिससे छात्र वांछित पुस्तक को कम्प्यूटर पर खोजकर अध्ययन कर सकें। कम्प्यूटर के द्वारा बडे समूह को शिक्षक द्वारा एक साथ किसी भी विषय पर जानकारी दी जा सकती है तथा प्रोजेक्टर डायस्कोप , एपीस्कोप काम में लिया जा सकता है।

पारदर्शी स्लाइड का उपयोग कर बडें पर्दे पर देखकर आसानी से पढ़ा व समझा जा सकता है । दूरस्थ शिक्षा के क्षेत्र में दूरदर्शन ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है इसके माध्यम से टेलीविजन तथा रेडियों द्वारा समय असंख्य लोग घर बैठें ज्ञान प्राप्त करने है।

इन्टरनेट एक अत्याधुनिक तकनीक है इसमें करोडों कम्प्यूटर एक नेटवर्क से जुडे हुए होते है जिस पर छात्रों को विभिन्न संगठनों, प्रतिष्ठानों, औद्योगिक इकाईयों, विभिन्न समूहों तथा निजी व्यक्तियों द्वारा बनायें गयें हजारों सर्वर से संबंधित जानकारियां मिल जाती है साथ ही साथ पाठ्य सामग्री अथवा सूचना को विश्व में एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुंचाने के लिए समय, श्रम व धन का कम खर्च होता है। इन्टरनेट पर ई–मेल ,ई – कॉमर्स आदि की सुविधा होती है। ई–मेल के द्वारा छात्र अपने लिखे संदेश, दस्तावेज, चित्र, विडियों क्लिप आदि को विश्व के किसी कोने में भेज सकता है तथा विषय विशेषज्ञ से सम्बन्धित जानकारियों प्राप्त कर सकता हैं। ई–कॉमर्स जिस पर वस्तुओं का क्रय विक्रय किया जा सकता है। इसी प्रकार टेलीकान्फ्रेसिंग एक ऐसी इलैक्ट्रॉनिक प्रणाली है जिसमें दो या दो से अधिक व्यक्ति दूर बैठे अपनी इच्छित विषय वस्तु से चर्चा परिचर्चा में भाग ले सकते है। आज के प्रगतिशील युग में शिक्षण प्रक्रिया में तकनीकी में चाहे वह दूरस्थ शिक्षा ही क्यों ना हो अपना जो स्थान बनाया है उसके बिना शिक्षा की व्यवस्था अधूरी सी प्रतीत होती है।

दूरस्थ शिक्षा पर शैक्षिक प्रौद्योगिकी का प्रभाव

संचार प्रौद्योगिकी में दूरस्थ शिक्षा अभियान में क्रान्तिकारी संभावनाएं प्रकट की है। विशेषतः उच्चतर शिक्षा के विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं संस्थानों द्वारा प्रायोजित कार्यक्रम देश के प्रत्येक भाग में पहुंचने प्रारम्भ हो गये है। दूरदर्शन आज ज्ञान एवं शिक्षा का सशक्त माध्यम बन गया है। आज से लगभग 20 वर्ष पूर्व पंचायत समितियों के सामुदायिक केन्द्रो पर दूरदर्शन उपकरण लगायें गये थे लेकिन अप्रशिक्षित कार्यकर्ताओं एवं लगनशील नवयुवक शहरों की ओर पलायन नहीं करें बल्कि उनकें ज्ञान में वृद्धि एवं शिक्षा की व्यवस्था वहीं उपलब्ध हो सके।

निष्कर्ष

शिक्षा समाज के लिए नितान्त आवश्यक अंग बन गया है। इसलिए हर व्यक्ति के लिए शिक्षा प्राप्त करना आवश्यक हो गया है। जो व्यक्ति किसी कारण से शिक्षा नही प्राप्त कर पाये है उनके लिए दूरस्थ माध्यम से शिक्षा प्राप्त कर पाना सरल हो गया है। तकनीकी के आगमन के फलस्वरूप शिक्षा को ग्रहण करने में हर व्यक्ति को सरलता प्राप्त हो रही है, वह कही भी किसी भी जगह रहकर शिक्षा ग्रहण कर सकता है। सूचना क्रांति ने दूरस्थ शिक्षा उपलब्ध कराने में इनके लिए मील का पत्थर साबित हो रहा है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

लाल,रमन विहारी(2007) शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्वान्त,रस्तोगी पब्लिकेशस,मेरठ।

गुप्ता,एस.पी.(2004): भारतीय शिक्षा का इतिहास एवं समस्याएं,शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।

एस.सी.आर.टी.सी जी. इन ।

हैण्डबुक ऑफ डिस्ट्रेन्ट एजूकेशन चतुर्थ एडीशन।

तिवारी, अनुजा :दूर शिक्षा का प्रबन्ध, गुलीबाबा पब्लिकेंशन हाउस।